आज के नए यूरोपीय कवि १ यूनान

कोस्तिस पापाकोंगोस

अशक्त जनपद

और अन्य कविताएँ

ग्रीक भाषा से हिन्दी अनुवाद

सतीकुमार

आवेश फोरम नई दिल्ली के
सौजन्य से प्रकाशित

इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली-५१

प्रसंगवश

मैं एक प्रचण्ड सिर को हाथों में लिए जाग पड़ा हूँ और इसके भार से मेरी कुहनियाँ अकड़ चुकी हैं। मैं इसे कहाँ स्थापित करूँ ?

जब मैं सपने से बाहर निकला तो वह सपने में डूब रहा था। अब हमारे पिण्ड इस तरह घुल मिल गए हैं कि उन्हें अलग करना संभव नहीं

(मिथ कथा से)

कोस्तिस पापाकांगोस की इन कविताओं का अनुवाद करते समय नोबेल पुरस्कार विजेता ग्रीक-कवि सफेरिस की उपर्युक्त पंक्तियाँ अचानक याद आती रहीं। १९६७ की सैनिक क्रान्ति के बाद ग्रीस के सैकड़ों बुद्धिजीवियों को अपनी मातृभूमि से अलग होना पड़ा। कोस्तिस भी उनमें से एक था। लेकिन इस दीर्घ प्रवास के बावजूद (तब से वह स्वीडन में रह रहा है) वह 'ग्रीस' से नहीं टूटा। वह 'एक और ग्रीस' (इस शीर्षक की एक कविता भी यहाँ संकलित है) उसे स्वयं अपने अन्दर मिला। उसकी कविता इस विस्मृत ग्रीस को तानाशाही के ध्वंस पर फिर से स्थापित होते देखने की संघर्ष प्रक्रिया है।

ग्रीक-कविता पर वहाँ के एक अन्य प्रसिद्ध कवि कावाफी के प्रभाव का जिक्र अक्सर होता आया है। लेकिन वहाँ की युवा पीढ़ी कावाफी से उतना ही आगे आ चुकी है जितना कि 'तार सप्तक' हिन्दी कविता से 'अज्ञेय' पीछे रह चुके हैं। कोस्तिस पापाकोंगास भी ग्रीस के युवा-वर्ग का प्रसिद्धि प्राप्त एवं 'प्रतिबद्ध' कवि है (ग्रीस में उसकी कविताओं पर प्रतिबंध है) यहाँ तक कि उसकी लम्बी कविताएँ भी ('मुशैन' और सभा भवन आदि) इसका अपवाद नहीं।

कविताओं का हिन्दी-अनुवाद स्वयं कवि के सहयोग से मूल ग्रीक-भाषा से किया गया है। विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं के उद्गम-स्थल दो दूरागत-देशों—भारत और ग्रीस—की काव्य पीढ़ियों के मध्य 'संवाद' के रूप में उठाया गया यह पहला लघु एवं महत्वपूर्ण 'यात्रा' की शुरुआत है।

दधीचि

ब्राबालागातन ८
स्टाकहोम



क्रम

इस सूत्र की वस्तु इतनी लंबी है कि तुम्हारा
राष्ट्रीय ध्वज भी उसे नहीं बाँध सकता।

समय-महान्

सघर्ष के क्षणो म
हम कविताएँ नही लिखते
एक वहशी लय गाते हुए
हमारी हड्डियाँ बिखर जाती है
और कारतूसो की झनझनाहट—
हवा मे भर जाती है।

हवा मे उठे पुलो पर से
हमे अपनी हुकारे सुनाई देती है
जब कि नीचे से जहाज गुजरते हैं।

सघर्ष के क्षणो मे
हम 'दर्शन' नही पढते।
हमारे शरीरो मे पनाह लेते ह
हजारो निष्कासित सूरज
जिनकी लपटे दिखाई देती ह
हमारे अस्त्रो से लपकती।

आ समय महान्!

बीस साल बरसात मे

गुरिल्लो का आमेट-स्थल ये पिदोस-पर्वत'
घास से ढका यूनान का गर्वित-वक्ष है।

यहाँ हमारे दिल धडका करते थे
तोपो की कर्कश लय मे
जो अन्धेरे का जिगर काट जाती थी।
यही हमने अपने इन्तजार मे पाया था
रक्त-लपटो मे दहकती
प्राणप्रिया आजादी को।

तभी आकाश म विषाक्त बादल घिर आए
और बम-वर्षा ने हमे निष्क्रिय कर दिया।
देखते-देखते बर्बर-आंधिया
हमारे फौलादी-धडो से सिर उडाकर ले गई
अन्धी-दिशाओ मे।
और खडे रह गए हम
निर्वसन—पेट धड
उगलिया-कटे भिक्षुक हाथो की तरह।

उसके बाद विदेशी सौदागर यहाँ पहुँचे
तकनीकी जबडो से लैस
हमारे पैरो को रौंदते हुए।
उसके बाद रहा-सहा खून,
'मार्शल'-प्लान के सिरिंज भेद कर
हमारी पीडित नसो मे खीच लिया गया।

गुरिल्लो का आखेट-स्थल ये पिंदोस
सपनों के मरघट मे बदल गया।

अब वहा पर सुनाई नही देता
अस्त्र-कठो से बुलबुल का परिचित गीत।
रोशनी का लगडाता बदन
अन्धेरे के पैबदा और हथकडियों मे घिर कर रह गया।
अब वहा उडती है
धूप की फटी लाल-भडियाँ।
बीस साल की आततायी बरसात मे
सभी पहाड गल गए—
याचको की तरह सिर्फ शिलाए खडी रह गई
खूखार-दातो की तरह
जो अन्धेरे मे जगली-साडो सी दिखती है।

लेकिन हमारी आस्था एक दूसरे सूरज मे है
जिसकी पैनी-किरणे
पर्वतो की बर्फीली-कोख मे गडती जा रही है
जिसकी तपश मे
मरे हुए बीज करवटें ले रहे हैं
और उगने लगा है
अस्थाकार पेडो का दुर्भेद्य जगल।

हमारी आस्था उन हाथो मे है
जो आंधी और वर्षा मे भी निर्माण करते चले गए,
जिनका आगोश
हमारे अधूरे गीतो की अगली कडी होगा ।

पिंदोम के गुरिल्ला-पवत के ऊपर
उदास चाद नेलौस पडा है
रक्त की निगन्ध बूद की तरह
स्मृतियो की काली रोशनी बिखेरता
यही मेरे दादा को फासी लगी थी
और पिता को एक कारतूस ने चूमा था
और यही कभी मेरी लाश पर
तानाशाहो के अट्टहास सुनाई देंगे ।

लेकिन हम सब का खून
आजादी की बाढ मे बदलता जा रहा है
और दासत्व बोध मे झुके हुए सिर
गर्व मे उठने लगे है ।

भविष्य एक ऐसा खिलाडी है
जो अमरता के अवरोधित-रास्ते पर
लम्बी दौड लगाता हुआ चला आ रहा है ।

मैं उसके स्वागत के लिए
आगे बढ गया हूँ
एक बोझिल घडी की तरह
दिल को हाथो मे लिए ।

बीस साल की खामोशी के बाद
बीस साल की बरसात के बाद
पिदोस का गुरिल्ला पहाड
अब भी कायम है—
घास से ढके यूनान के गर्वित-वक्ष की तरह

एक और ग्रीस

आसमान में लटकते हैं संगमरमर के प्रभामंडल
और सर्पीले रास्ते
सरकते हुए गाँवों में खो जाते हैं।
चट्टानों पर जमी हैं कुहरे की पपड़ियाँ
जिन पर वायवी स्मृतियाँ खेल रही हैं।
यह दृश्य घोषित कर रहा है
अंधकार को समेटने की
अपनी हठीली भुजाओं में।
क्मेरोका ग निर्मित मात्र यहीं नहीं बीतता।

भूगर्भ विशेषज्ञ आकर कह गए
'ग्रीस पत्थरों से निर्मित है।'
मैदान में जाता है अपनी तरह लपटों को
बदलियों में लगा है बारजूमा का बुखार
उगते हुओं की फौलादी गाड़ियाँ
सीधी आसमान को जाती हैं।
उतार में भाड़ भाड़ और खाई को गई
'ग्रीस पत्थरों से निर्मित है।'

अब पत्थर पर गहरा फिर टूटी है

सूनी गलियो मे
समुन्दर की खारी हवा घूमती है।
इतिहास पढने की जरूरत नही
सभी जानते ह कि
गुरिल्ला पर्वतो को उडाने के लिए
हैरी ट्रूमैन ने ढेरो-बम गिराए
और यह कह कर लौट गया
'ग्रीस पत्थरो का बना है।'

यहाँ बन्दूकों के भारी दस्तों से
कामगरो के सिर फोडे जाते है
और नाजुक गले
फन्दो मे अन्डो की तरह टूट जाते हैं।

लेकिन
आ दुनिया के तानाशाहो !
पिदोस पर सूरज फिर उगेगा
शहीदो की वापिसी की तरह
क्योंकि ग्रीस पत्थरो से निर्मित है।

अशक्त जनपद
या
चतुर्भुज-वायु का आह्वान

पूर्व के साथियो,
और पश्चिम के सज्जनो !
आपकी इजाज़त हो तो कुछ कहूँ
स्पष्ट भाषा मे
एक सीधे सादे ग्रामीण की तरह
ताकि बात का महत्त्व हो, भाषा का नही।

बहुत पहले
आधी रात के अन्धेरे मे
एक अजनबी हाथ और चाकू ने
एक खौफनाक जुर्म किया था।
तब हम पुल बनाने मे व्यस्त थे
सपनो के समुन्दर पर
और हमारा 'कल'
उमगो का क्रीडा-स्थल बनने जा रहा था।

आप सबने यह जुर्म होते हुए देखा

पूर्व के साथियो
और पश्चिम के सज्जनो !

आपकी शासकीय आँखो के सामने
लाश से अब भी खून बह रहा है
मासूम लोगा के दिलो से
जो समुन्दर के उजाड किनारे हैं।
'यारोस'[1] के पथरीले-द्वीप मे
लोगो के सिर पत्थरो की तरह लुढक रहे है।

लेकिन हमारी खोपडियो मे
उधारे-दिमाग भरने की
हर कोशिश का जवाब
हम अपने खून से देंगे
और 'एथन' की गलियो मे सुनाई देगा—
"फासिज्म मुर्दाबाद !"

कभी हम
हँसते हुए इन गलियो से गुजरते थे
महकती रात को
अपने कन्धो पर उठाएँ।
समय की बजर-पडी भूमि पर
हमारा हर एक शब्द
बहार के बीज की तरह था।
लेकिन आपके देखते-देखते
हमारे 'दिन' की टागे कुचल दी गई हैं
टैंको के नीचे
और हमारी औलाद का भविष्य

तोपों की नालियों पर बैठा है
भयभीत-परिन्दे की तरह ।

आज मेरे देश में
सुर्खियाँ दीवारों से सटी खड़ी हैं,
और कँटीले तारों में फँसी
उम्मीद फड़फड़ा रही है
और रोशनी दम तोड़ रही है
अँधेरे की दहलीज पर ।
हमारी आवाज़ चुराई जा चुकी है
ताकि सच सुनाई न दे ।

"बोलो, कामरेड कोसीगिन !
पर्दों से निकल कर अब सामने आओ
आज़ादी के परिन्दो
जॉनसन, विल्सन "
यूनान अशक्त और अपंग हो चुका है
और एक प्रेत छाया की तरह भटक रहा है
दुनिया के शहरों में
बन्द दरवाज़ों पर दस्तकें देता हुआ ।

यूनान बढ़ रहा है
यूरोप की सड़कों पर
हवा की रफ्तार से
नीले आसमान का झंडा फहराता हुआ ।

मुझे चतुर्भुज-हवा का आह्वान करने दो
ताकि समय के न्यायालय में

जुर्म दर्ज हो सके !

अब 'पार्थेनोन'[1]
अपने बूढ़े दाँत किटकिटा रहा है
और इन्तजार में है
बादलों की कड़कड़ाहट
और वज्रपात-जन्य रोशनी की।

यूनान के बदन में
दिल
एक टाइम-बम है
जो अब कभी भी फट सकता है,
पूर्व के साथियो
और पश्चिम के सज्जनो !

रिचर्ड निक्सन के नाम एक खुला पत्र

श्रीमन् निक्सन !
हमने सास रोक कर तुम्हारा पदाभिषेक होते देखा
और तुम्हारी 'शपथें' बहुमूल्य लगती थी
और उम्मीद थी कि अब शान्ति-पताका
घोडा-हाँकने की छडी से बाध दोगे ।

लेकिन हमने देखा
किस तरह अबाध बम-वर्षा मे
इन्डोचाईना की नीवें हिल गई ।

बजट के लेखे मे पिंजरो की सख्या बढ गई
और कब्रिस्तान मे जगह पाने के लिए
मुर्दों की भीड लग गई ।
नारकोटिको और वैतनिक-हत्यारो को
आजादी मिल गई ।

लोबान के पिस्तौल को
ठन्डी नालियो के सुराखो से
हमे अपने टैलीवीजनो पर
अमरीका का भयकर चेहरा दिखाई दिया ।

इस लम्बे अरसे में
तुमने धरती को ख़ून मे सोच दिया,
फोर्ड और शवर्लेट कारें
दुनिया की हर सड़क पर सवार है।

वियतनाम का ध्वस हमारे लिए
भयकर सपनो की सम्पदा बन गया है
राजनैतिक-हत्यारो के पदचिह्न
हर घर के सामने अंकित हैं।

तुम स्वय वियतनाम के कधो पर सवार हो
एक जघन्य वैताळिक की तरह—
तुम्हारी 'बुलेट-प्रूफ' कारें इसकी गवाह है।
और तुम्हारे ये मुलायम कालीन
गरीबो की चमडी से बनाए गए हैं
जो उनके जीवित रहते उधेडी गई थी,
श्रीमन् निक्सन !

जब भी हम तक कोई नई खबर पहुँचती है
गल फामी की तरह
हवा की नस तड़क जाती है,
टेलीवीज़नो और अखबार के पृष्ठो से
मानवीय खून टपकने लगता है।

हम कैसे सो सकते हे जबकि
डगलस और लौकहूड मार्का
बम-वपको की गूज
हमारी दीवारो मे समा चुकी है।

तुम्हारे बमों और मिसाईलों से
आदमी में हिम्मत नहीं रही कि
आकाश की तरफ सिर उठाए।

अब तुम्हीं बताओ, श्रीमान् निक्सन !
हम कैसे सो सकते हैं
जबकि दुनिया की ज़मीर खतरे में है
और इस अभिशप्त-नक्षत्र पर
हत्यारे सरेआम घूमते हैं।
इस युद्ध की बदबू इतनी तीखी है कि
कि तुम्हारा राष्ट्रीय ध्वज भी
उसे नहीं पोंछ सकता।

इस विश्वासघात के बाद
अब सर पटकने में कोई तुक नहीं।
हम अब लड़ सकते हैं
सिर्फ हस्ताक्षरों से
ताकि वहाँ पर 'ट्राईगर' दबाती उंगलियां
अचानक बेजान पड़ जाएँ।

हम विक्षिप्तों की वह आखिरी पीढ़ी हैं
जिसे हिटलर ने पैदा किया था
हम उस पीढ़ी की बची खुची सन्तान हैं
जिसे एक बार तुम्हारे 'विकास' की कौंध ने
अंधा कर दिया था।
हिरोशिमा के शिखर पर
आग की लपटें घिरी देखकर तुम चीख उठे थे
"वो देखो सूरज !"

हम उधड़ी हुई स्मृतियाँ हैं
लपटें-धुआती
दहकती भटिठयो से,
यही कारण है कि
हम तुम्हे माफ नही कर सकते,
श्रीमन् निक्सन ! !

मैं कवि नही हू
बल्कि आँधी पर सवार
वक्त की जमीर हूँ
सुनसान रातो मे से गुजरती हुई।
मैं दौड रहा हूँ
माँ-धरती का कटा सिर अपनी छाती से दबाए
तुम्हारे घूसो ने जिसे विद्रूप बना दिया है,
ओ निक्सन !

मैं गुजरता हूँ खटखटाता हुआ
हस्पतालो की खिडकियाँ,
उन सजनो और नर्सों के कधो को झकझोरते हुए
जो अचानक बुत बन चुके है।
वियतनाम दम तोड रहा है ! हम मर रहे है !
क्या अब भी कोई उम्मीद बाकी है ?
धरती का पूर्वोत्तर-मदिर ध्वसित हो रहा है ?
उठो !
कुछ करो ! !

चौक मे सत्याग्रहियो की भीड लगी है
और आधी मे उड रहे है

[illegible] !
[illegible] !
[illegible] !

दो युवा आ[illegible] रहे हैं,
[illegible] तुम्हारे साथ [illegible]
रिचर्ड !
क्या तुम्हें कुछ याद है ?
तुम्हारी [illegible] रहे हैं जिन
वे [illegible] आ रहे हैं
[illegible] हुए ।
उनके साथ चल रहा है [illegible]
जिसने [illegible] साथ नहीं दिया
और उसका [illegible] सिर
शर्म से झुका जा रहा है ।
अब उसे तुम
वह दयालु बूढ़ा मत समझो
जो तुम्हारे [illegible] हाथों से गरम धान के लिए
नदियाँ और झरने ढूँढता फिरेगा ।
उसका बूढ़ा शरीर
एक हड्डियों की छड़ी पर झुका हुआ है
वह धीरे-धीरे तुम्हारी ओर बढ़ रहा है।
वाशिंगटन को जाती सड़कें
भीड़ से अवरुद्ध हैं ।

रिचर्ड निक्सन !
तुम कहाँ हो, रिचर्ड ?
क्या तुम्हें लोगों का दम तोड़ना सुनाई नहीं देता ?

क्या उनकी चीखें तुम तक नहीं पहुँचती ?
क्या तुम बहरे हो चुके हो ?

अगढ़ें सैनिकों की बैसाखियाँ
तुम्हारा दरवाजा खटखटा रही है
रिचर्ड निक्सन !
उधर देखो
पेंटागन किस तरह फैलता जा रहा है
एक पर्वताकार पाँव की तरह
यहूदियों को चीटियों की तरह कुचलता हुआ
और जो इन खूनी बरसात में
तुम्हारे लिए साबुन और फंदा थामे खड़ा है
'दाहायो" के कारखाना में बनी ।

क्या तुम अंधे हो चुके हो
रिचर्ड निक्सन ?
क्या तुम्हें वो औरत दिखाई नहीं देती
काले पहरावों में जो 'व्हाईट-हाऊस' के सामने
फांसियाँ खड़ी कर रही है ?

तुम अभी उसे नहीं जानते
रिचर्ड निक्सन !
वह इतिहास की छाया है
जो फाँसी के पास खड़ी
तुम्हारा इन्तजार कर रही है !

रिपोर्ताज

रात का वासी शव
खून मे लथपथ मेरी आखो के सामने पडा है,
उसकी आँखो मे ठडी आग भरी है।

यह शव
गुब्बारे-सा फलता जा रहा है
जो किसी भी क्षण फूट सकता है
मेरी आखो के पास
एक हथगोले की तरह।

मै आसमान का रग बदल देना चाहता हूँ।

सभा-भवन

काली ऐनक पहन वह आदमी
तेजी से चलता हुआ
सभा भवन मे दाखिल हुआ ।

प्रधान मन्त्री,
मन्त्री,
ससद-सदस्य और अगरक्षक,
सभी मे खामोशी छा गई
और सभी ने भाग कर
काली ऐनक पहने उस आदमी का
स्वागत किया ।
मच पर से
वह उनकी ओर देख कर मुस्कराया ।

उसके बाद उसने अपना काला कोट उतारा
और उसे फैला कर
कमरे मे इस तरह फका
कि सभी कोट के नीचे दब गए ।
कुछ क्षणो की उस खामोशी म लगा
जैसे किसी की अ यक्त चोच अ धेरे मे
काठ कुतर रही हो ।

अशवत जनर

उसके बाद उसने अपना कोट समेट लिया
—जैसे वह उसका पंख हो—
और उसने देखा कि कुछ ही क्षणो मे
सभी गंजे हो चुके थे ।

काली ऐनक पहने आदमी
फिर मुस्कराया ।
इसके बाद उसने अपनी छडी से
सब के सिरो मे
—एक के बाद एक—
छेद कर दिए ।
हर एक छेद से
एक काली चिडिया निकल कर उडने लगी
जो उस काली ऐनक पहने आदमी जैसी ही
दिखाई देती थी ।

—कल
एक नया दिन उदित होगा
हमारे देश के राजनैतिक क्षितिज पर ।

इसके बाद उसने सभी से विदा ली
और देखते ही देखते
अचानक छत मे एक दरार पड गई
जिसमें से वे चिडियाँ उड कर
शहर की चारो दिशाओ मे फैल गई ।
और काली ऐनक पहने वह आदमी

जिस दरवाजे से आया था
उसी में से मुस्कराता हुआ
ग़ायब हो गया।

मुन्शेन

लेट कर जब मैं बिजली बुझा चुका
—शहर के इस सस्ते होटल मे—
तो अचानक फर्श काँपने लगा
और बूटों की आवाज़
मेरे बिस्तर की तरफ़ बढने लगी।

मैं बत्ती जला कर फिर उठ बैठा
लेकिन पदचाप पास आती गई।
ज़ाहिर था कि कोई
नीचे की मंजिल पर टहल रहा था।
मैं नीचे उतरा तो देखा
वहा चित्र लटक रहे थे
हिटलर के अफसरो के
बरामदे की दीवारो पर।

मै फिर से ऊपर चला आया
और सोने की कोशिश करने लगा।
लेकिन अंधेरे मे
वही पदचाप फिर सुनाई देने लगी
भीड की भीड जसे ऊपर चढती आ रही हो

मेरे कमरे की तरफ।
उठ कर भाग निकलने की इच्छा के बावजूद
मैं निष्क्रिय पडा रहा।
तब अचानक मेरा पलग फर्श से उठा
और एक हल्की चिता की तरह
खिडकी से बाहर बह गया।

सोचा
कि अब फर्श पर जा गिरूँगा
लेकिन ऐसा न हुआ
दरअसल मेरी खिडकी
एक रास्ता भर थी
जो दाचाऊ के चूल्हे को जाता था।

इसके बाद मेरी आँख खुल गई।
मेरी चर्बी
पसीना बन कर बह रही थी।
गर्मी का मारा
मैं स्नानागार की ओर भागा
लेकिन साबुन देखते ही
मैं सहसा चौंक पडा।
वह किसी आदमी की
कटी हुई जिह्वा थी।
लेकिन मैं हिब्रू नही समझता था
और उस साबुन के सामने
शर्म के मारे
मैं धरती मे गड गया।

कलकत्ता

मुझे नही मालूम
अगर आपने कभी छुआ है
हाथो का कोढ
और उन लोगो से मिले हो
जिनकी आँखो मे
अन्धे-कुओ का गहराव है
और जिनके घाव
फूलो पर जमी काई की याद दिलाती है ।

मुझे नही मालूम अगर तुमने कभी
कलकत्ते को रेगते सुना है
स्वय अपने अन्दर ।

हड्डिया
जो प्रश्नवाचक-चिह्नो मे ढल चुकी है
और मरणासन्न फेफडो की हवा मे
सास लेती है
विद्रोही पीढियाँ ।

तुम कभी दुर्घटना-ग्रस्त नही हुए

लेकिन तुम्हारे दिल मे जैसे
किसी ने बारूद भर दिया हो
और विस्थापित-सपने सितारो की मीनार पर
तुम्हें फाँसी चढ़ाने की कोशिश मे हैं।

जाने के बाद देख रहा हूँ
सूरज निस्ताप है
और कलकत्ता रुँधा है
चीत्कार की तरह
यथार्थ के गले मे।

रोशनी के पीछे

आसमान पर जो बादल तैर रहा है
सिफ पनीला धुआ नही
बल्कि एक पछी है
जिसकी प्यास का आकार
उसने अपने शरीर-सा है
जब भी हमने चाहा
उसका कांच तडक कर ढेर हो जाना है
सडक पर बिछी
हमारी छायाओ पर।

शब्दो पर
जब खामोशी की पपडी जमने लगती है
तो उस पर उग आते हैं
भयग्रस्त चीखो के कैक्टस।
स्मृति कदराओ के द्वार
अवरुद्ध पडे रहते हैं
कुहरे की साकले तोड कर
वहा कोई नही जा सकता
अर्थ की तलाश मे।

समय का भारी पहिया
अब मुश्किल से घूमता है
निस्पृहता की आरोपित-प्रक्रिया में
मुझे समुन्दर भूल जाता है
मुझसे हवा अलग हो जाती है
और हम कुबड़े होकर
अपने दिलों पर झुक जाते हैं
समय की पदचाप सुनने के लिए।

स्वत्व

ज़मीन की शक्ल मेरे दिल जैसी है
मैं उन सब का सजातीय हूँ
जिनकी धरोहर यह मिट्टी है।

तुम्हारे विजयोल्लास की प्रतिध्वनिया
मेरे कण-पटो पर अकित हैं।

'ग्रेनेड' की शक्ल मेरे दिल जैसी है
जिसे मैं अपने हाथो मे थामे हूँ
और इसे फेंकने की ताक मे हूँ
वहा
जहाँ पर
लौह-शृखलाओ के साँप लोटते हैं।

जल

जल हम वहा वर ले जाता है
मितारो के बीहड जगलो से ।

ये हवा की टहनियाँ है
जिन्होने
पाखियो को चादई कर दिया
और पेडो को रसाक्त ।

ये हवा है
जिसकी खामोश लहरें
तोड जाती हैं
विगत-स्मृतियो के सूखे चेहरे को
समय की
मुडेर पर से ।

आकृति

मैं अंधकार की जड़ों से उगा हूँ
और काली टहनियों में बदल गया हूँ।

मैं रात की आकृति हूँ
लेकिन मुझमें भरे हुए हैं
रोशनी के बुदबुदे।

अपने गगनव्यापी रास्तों पर
लोगों को धराशायी होते देख कर
मुझे हँसी आती है।

मैं आपकी आंखों के सामने से
बिना दिखाई दिए गुजर जाता हूँ।

मैं आपकी जिजीविषा से परिचित हूँ
और मेरे कान
कानाफूसियों का घोंसला बन चुके हैं।
आपकी अपारदर्शी नजर
मेरी ऊँचाई नहीं माप सकती।
मैं आलोकित आंख हूँ

और रात का चेहरा हूँ
आपकी गोद पर झुका हुआ।

आंधियों और तूफानों को फांदता हुआ
मैं दौड़ता चला जा रहा हूँ
और मेरी मंजिल
एक फूल है।

जीवन-वृत्त

मैं एक पर्वत-पिंड हूँ
धुएँ की तरह फला हुआ,
और आग उगलता हूँ।

मैं नही जानता
मेरी कौन-सी लपटें
वायु-पाश बनती हैं।

और मेरे समानान्तर
सूरज उदित होता है
मुट्ठी की तरह तना हुआ
धरती के चेहरे पर।

हवा

प्रत्यचा की तरह कांपती है
पत्ते फूलों से फिसलती है।

सोए हुए नगर को
सितारों पर बिठा आती है।
नारा, पास्टरों और लाल फूलों का शोर
बाढ में बह जाता है।

और समय आने पर
हवा ही के कारण
आदमी का गला घुट जाता है।

आकाश

अगर आकाश
फिसलने का एक बड़ा मैदान भर होता
क्रीडा-प्रिय फरिश्तो के लिए
और
अगर आकाश हमे स्वीकार कर लेता
तो हम उसकी वायावी-मूर्ति को
—जो ठन्डे पत्थरो से गढी गई है—
कब के तोड चुके होते ।

तुम्हे क्या गर्व होगा
हमारे सैटेलाइटज कितनी ही बार
तुम्हारे इस आकाश पर
बिलियर्ड खेल चुके हैं ।

हम बली होते रहे
एक काटो का ताज-भर जीतने के लिए,
हमने नगे अस्त्रो का आलिंगन किया
अपने खून मे
सपनो के मुरझाए फूल सीचने के लिए ।

अब
हजार साला इंतजार के बाद भी
अगर तुम नहीं आओगे
तो यह बाँस फूलों का गुलदस्ता
हम अपने वारिसों को दे चुके होंगे।

अगर आकाश
समुन्दर की तरह द्रवित होता
तो अमरत्व की काच-मूर्ति
कब की टूट चुकी होती
और हम अपने फटे झंडे में
लिपटे रह जाते।

नाम-तुषार

अपने नीलाभ घेरा से निकल कर
चाँद पहुँचता है
उदास पेड़ो के मंडप पर ।

इसमें
उन आततायी आंखों की याद आती है
जिनसे आग टपकती है
वेसमझ घास पर ।

बीज

मैं जेल की पैदाइश हूँ
जिसकी दीवारे इस दुनिया मे बँटी हुई है
और खिडकियाँ अन्धी है।

मैं सिफ
सपनो की ठडी रोशनी से वाकिफ हूँ
और सूरज का अन्दाजा लगाता हूँ
दीवारो की घनी छायाओ से।

अब मैं स्वय मे बन्द हूँ
एक हथ गोले की तरह
और इस फौलादी घेरे मे
कभी भी फट सकता हूँ।

शब्द-सकेत

१ पिदोस १९४१ ४५ के दौरान—जबकि द्वितीय विश्वयुद्ध की आधी अपनी पराकाष्ठा पर थी—ग्रीस मे 'क्राति' लाने की कोशिश की गई थी जो कि असफल रही। तब गुरिल्ला युद्ध का 'केन्द्र' यही पिदोस पर्वत था। सभवत इस नाम का सबध एक प्राचीन ग्रीस-कवि पिदारोस' से हो।

२ यारोस ग्रीस का एक कु प्रसिद्ध द्वीप। राजनतिक कदियो का कारागार। साइबेरिया' और 'काला पानी' का सस्करण।

३ पार्थेनोन एथन्स के 'एक्रोपोलिस' म बना एक प्रागैतिहासिक मदिर।

४ दाहायो म्युनिख के पास एक जमन गाँव। हिटलर के दिनो म यहा पर यहूदियो के बालो से फाँसी की रस्सियाँ और उनकी चर्बी से नहान का साबुन बनाने की कोशिश की गई थी।